विषय सूची

01.	पेश लफ़्ज़	04
02.	ऐतराज : क्या ईश्वर/अल्लाह बेबस है? (नाउज़ुबिल्लाह!)	05
03.	ऐतराज़ : क्या सुबूत है नुबुव्वत का?	07
04.	ऐतराज़ : क्या सुबूत है कि कुर्आन अल्लाह की किताब है?	11
05.	ऐतराज़ : कुर्आन में ख़ून–ख़राबे का हुक्म है.	16
06.	ऐतराज़ : इस्लाम, भारत और चीन पर ख़ामोश क्यों?	22
07.	ऐतराज़ : क्या अल्लाह इन्सानी भाषा का मोहताज है?	23
08.	ऐतराज़ : क्या धरती सिर्फ़ एक ही है?	24
09.	ऐतराज़ : चाँद के रोशन होने की बात ग़लत है.	25
10.	ऐतराज़ : नये आविष्कारों के बारे में कुर्आन चुप है.	26
11.	ऐतराज़ : चाँद पर इन्सान के जाने पर ख़ामोशी	27
12.	ऐतराज़ : आख़री नबी होने का क्या मतलब है?	30
13.	ऐतराज़ : अल्लाह क़ादिरे–कुल (सर्वशक्तिमान) कैसे है?	33
14.	ऐतराज़ : अरब में ऐसा क्या जो पूरे ब्रह्माण्ड में नहीं	35
15.	ऐतराज़ : ग्रन्थों में समानताएं हों, तो भी क्या फ़ायदा?	39

हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) की नुबुव्वत को झुठलाए जाने के बाद अल्लाह ने अज़ाब नाज़िल किया। उस अज़ाब से सिर्फ़ वही लोग बचे थे जो उनके साथ कश्ती में सवार थे। जिस क़ौम के पास बाद में कोई नबी नहीं आया वे सब उन्हीं की उम्मत हैं। क़यामत के दिन वो लोग अज़ाब से बचने के लिये उज्र (बहाना) पेश करेंगे कि हमारे पास कोई नबी नहीं आया, इसलिये हम पर से अज़ाब को टाल दे। उम्मते-मुस्लिमा को गवाही देने के लिये खड़ा किया जाएगा। पूरी हदीष अगले पेज पर पढ़ें और 'हक़ की गवाही' की अहमियत पर ग़ौर करें.

उन्हें करना पड़ता है और जो क़ुर्बानियाँ देनी पड़ती हैं, उनको उस अवतार ने इसलिये सहन कर लिया क्योंकि वो इंसान के रूप में साक्षात् ईश्वर था। **लिहाज़ा अल्लाह ने हर काल (युग) में अपने सन्देश को अपने बन्दों तक पहुंचाने के लिये इंसानों का चयन (सलेक्शन) किया, जिन्होंने न केवल सन्देश पहुंचाया बल्कि ख़ुद भी उस पर अमल करके लोगों के लिये आदर्श बने। नबी की ज़िन्दगी इन्सान के लिये नमूना होती है। जिस तरह उन्होंने अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारकर दिखाई, उसी तरह दूसरे लोग भी गुज़ार सकते हैं। यह अल्लाह का करम है, उसकी बेबसी नहीं है।** यह ऐतराज़ ख़त्म हो जाने के बाद नुबुव्वत को न मानने वाले लोग यह सवाल करने लगते हैं कि वो नबी को सच्चा क्यों माने? इसका जवाब अगले ऐतराज़ के जवाब में दिया जा रहा है।

02. क्या षुबूत है, नुबुव्वत का?

आख़िर वह विशेष व्यक्ति या नबी जो दूसरों से कहेगा वह उसकी सुनी हुई बात होगी जो अन्य सबके लिये सुने और कहे हुए (Hear-Say) के दर्जे का ही अप्रमाणित साक्ष्य होगा। वह सन्देश वेदों के लिये अल्लाह का क्हा हुआ नहीं बल्कि उस विशेष व्यक्ति का कहा हुआ ही होगा जो यह कहता है कि ईश्वर या अल्लाह ने उससे ऐसा कहा था। ऐसी गवाही क़ानून की नज़र में घटिया गवाही है। क्या ज़मानत है इस बात की कि मुहम्मद साहब अल्लाह के नबी हैं? सिर्फ़ मुहम्मद साहब का अपना बयान, बुद्धि (अक़्ल) और विवेक (हिक्मत) की नज़र में ठोस षुबूत नहीं माना जा सकता, किसी ने न तो फ़रिश्ते को आते हुए देखा और न मुहम्मद साहब को आयतें सुनाते हुए देखा, न और कोई प्रमाण है, इस श्रद्धाजन्य (अक़ीदत से उपजी) धारणा के पक्ष में।

जवाब : जहाँ तक क़ानूनी षुबूत का सम्बन्ध है, तो वो उस रूप में भी नहीं हो सकता जिसका सवाल में प्रस्ताव रखा गया है। एक व्यक्ति क्हता कि मेरे मन में अल्लाह ने यह विचार डाला है कि ग़रीबों की मदद करो, दूसरा यह कह सकता था कि नहीं, अल्लाह की मर्ज़ी है कि हरेक अपनी मेहनत की कमाई खाये, दूसरे को दान देकर उसे निकम्मा न बनाए। इसका क्या षुबूत (प्रमाण) होता कि पहला इन्सान ठीक कह रहा था या दूसरा व्यक्ति सही था? मन के अन्दर से किसी सच्चाई को क़ुबूल करने के बाद कोई ज़बान से इन्कार करे तो षुबूतों की ज़रूरत होती हैं। इसे ही क़ानूनी प्रमाण कहते हैं। क़ातिल जब क़त्ल से इन्कार करता है तो वह अपने मन में यह जानता है कि वह झूठ बोल रहा है।

ख़ून-ख़राबा करने का हुक्म हर्गिज़ नहीं दिया है। अगर कोई मुस्लिम नामधारी व्यक्ति अपनी मर्ज़ी थोपने की कोशिश करे तो वो अल्लाह के अ़ज़ाब का हक़दार होगा।

05. इस्लाम भारत और चीन पर ख़ामोश क्यों?

भारत और चीन जैसे महान देशों का नाम न तो वहां (क़ुर्आन में) दिया गया है और न इन देशों में ख़ुदा के ज़रिये भेजे गये पैग़म्बरों का ही ज़िक्र है और इसकी एक ही वजह है कि मुहम्मद साहब को जितना मालूम था, उन्होंने उतना कह दिया और जितना नहीं मालूम था उसके बारे में मौन रहे।

जवाब : क़ुर्आन पाक में इसका स्पष्ट ज़िक्र है कि दुनिया के हर हिस्से में अल्लाह तआ़ला ने नबी (ईशदूत) भेजे, इसलिये भारत और चीन भी इनसे अछूते नहीं रहे। अगर आप विस्तार से जानने की चाहत रखते हों तो **'अगर अब भी न जागे तो', हज़रत मुहम्मद और भारतीय धर्मग्रंथ, 'अन्तिम संदेष्टा'** जैसी किताबें पढ़ सकते हैं।

अगर आप मन की आँखों से देखें और ईमानदारी से विचार करें तो आपको महसूस होगा कि वेदों की अधिकतर ऋचाएं (श्लोक/आयतें) एकेश्वरवाद की बात कहती हैं। वेदों में अन्तिम ऋषि 'नराशंस' (इन्सानों में तारीफ़ वाला यानी मुहम्मद) **का ज़िक्र मौजूद है। यहां तक कि अगर आप ग़ौर करें तो भगवान श्रीकृष्ण जन्मगाथा में हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) की पैदाइश के वाक़िये की झलक नज़र आती है।**

हिन्दू धर्मग्रन्थों में वैवस्वत मनु (सत्यव्रत) के दौर में प्रलयंकारी बाढ़ आने और सारी दुनिया के डूब जाने और उसमें सिर्फ़ उन लोगों के बचने का हवाला मौजूद है जो उनकी नाव में सवार थे। यह कथा (वाक़िया) अल्लाह के नबी हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) के वाक़िये से काफ़ी हद तक मिलती-जुलती है।

इसके अ़लावा हिन्दू धर्मग्रन्थों में प्रह्लाद को आग में डाले जाने और इसमें से उनके ज़िन्दा बच निकलने की कथा मिलती है, यह कथा हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) को आग में डाले जाने और उनके उसमें से ज़िन्दा बच जाने के क़ुर्आनी वाक़िये से समरूपता रखती है।

क़ुर्आन में नाफ़र्मान लोगों की बस्तियों को ज़मीन में धंसा देने और अ़ज़ाब नाज़िल किये जाने का हवाला मौजूद है। भारत में सिन्धु घाटी के किनारे बसे मोहन जो दड़ो और हड़प्पा जैसे शहरों के अवशेष ज़मीन की खुदाई करने पर दुनिया के सामने